जेल की चारदीवारी में बंद दुनिया की मुकम्मल तस्वीर

जेल में बंद इनसान के लिए बाहर की दुनिया जेल है, तो बाहर के इनसान के लिए एक बड़ी-सी चारदीवारी में लोहे की सलाखोंवाले कमरे ही जेल हैं। लेकिन एक जेल इसके अलावा भी है, जिसमें हम सभी किसी-न-किसी रूप में कैद हैं। और इस जेल में सजा की कोई सीमा नहीं है, आदमी जब तक जीता है, इस जेल में रहता है और इससे रिहाई का मतलब है, इस दुनिया से रुख्सत होना। लेकिन कुछ ऐसे भी लोग होते हैं, जो जीते-जी भी इस जेल से मुक्ति पा जाते हैं।

बहरहाल अपने भीतर की जेल में बंद एक इनसानी दुनिया कितनी रहस्यमयी और अलग-अलग शेड्स की हो सकती है, इसे बहुत ही संवेदनशीलता के साथ मैथिली के प्रसिद्ध कवि

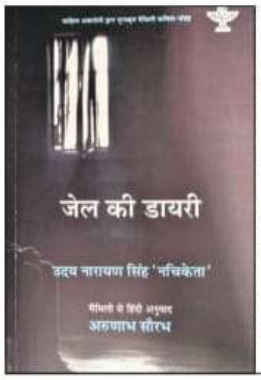

पुस्तक : जेल की डायरी (कविता-संग्रह)
लेखक : उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'
मैथिली से अनुवाद : अरुणाभ सौरभ
प्रकाशक : साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
मूल्य : 100 रुपये

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' ने अपनी कविताओं में उभारा है। हाल में उनके मैथिली कविता-संग्रह 'जहलक डायरी' का हिंदी अनुवाद 'जेल की डायरी' नाम से आया है। इसका अनुवाद कवि अरुणाभ सौरभ ने किया है। संग्रह में सत्ताइस कविताएं हैं। 'जेल की डायरी-1', 'जेल की डायरी-4', 'जेल की डायरी-9', 'जेल की डायरी-10', 'जेल की डायरी-20', 'जेल की डायरी-21', 'जेल की डायरी-24', 'जेल की डायरी-26' और 'जेल की डायरी-27' इस संग्रह की उल्लेखनीय कविताएं हैं।

कविताओं के शीर्षक और विषय भले ही जेल पर हैं, पर इन कविताओं में बाहर की पूरी एक मुकम्मल दुनिया समाई हुई हैं। इनमें प्रेम भी है, तो संबंधों के टूटने का दर्द भी है। समाज की चिंता भी है, तो क्रांतिकारी तेवरों से लैस राजनीतिक सोच भी है।